PRESS INFORMATION BUREAU
पत्र सूचना कार्यालय
GOVERNMENT OF INDIA
भारत सरकार

Navbharat Times, Delhi
Wed, 07 Jun 2017, Page 5
Width: 25.26 cms, Height: 30.92 cms, a3, Ref: 30.2017-06-07.54

फैसला भारतीय सेना ने जामिया मिल्लिया इस्लामिया के स्टूडेंट्स को दिखाया कश्मीर

देखी कश्मीर की अलग तस्वीर

Ramesh.Tiwari@timesgroup.com

30 स्टूडेंट्स को कश्मीर यात्रा के लिए चुना गया

जेएनयू में देश विरोधी नारों का विडियो सामने आने के बाद भारतीय सेना ने पहली बार कश्मीर के बाहर के युवाओं को घाटी की असलियत दिखाने का फैसला किया, जिसके फीडबैक से सेना बेहद उत्साहित है। सबसे पहले राजधानी के जामिया मिल्लिया इस्लामिया के स्टूडेंट्स को इसके लिए चुना गया। सेना के अफसरों में यह राय उभरी थी कि यूनिवर्सिटी देश विरोधी तत्वों का अड्डा बनते जा रहे हैं। निहित स्वार्थ वाले तत्वों की ओर से भड़काए गए विरोध प्रदर्शन में गैर कश्मीरी भी शामिल हो रहे हैं। इसके मद्देनजर पहली बार कश्मीर के बाहर के युवाओं को घाटी ले जाने का फैसला किया गया।

इसका नाम रिवर्स टूर रखा गया, क्योंकि भारतीय सेना कश्मीर के बच्चों को देश के विभिन्न हिस्सों में ले जाने के कार्यक्रम हमेशा ही आयोजित करती रही है। रिवर्स टूर का मकसद यह था कि देश के युवाओं को यह बताया जाए कि घाटी में हिंसा की जो खबरें सामने आती हैं, उनका दूसरा पक्ष क्या है। इस समय सुरक्षा हालात वास्तव में कैसे हैं। कश्मीर मुद्दे का ऐतिहासिक बैकग्राउंड क्या है। किस तरह से वहां टेरर फंडिंग को अंजाम दिया जा रहा है।

दूर की चिंता: जामिया की डीन तसनीम मिनाई के साथ यूनिवर्सिटी के 15 छात्रों और 15 छात्राओं का ग्रुप चुना गया, जो यूनिवर्सिटी के 15 विभागों से जुड़े हैं और देश के 12 राज्यों के रहने वाले थे। जब टूर का आइडिया आया तो सुरक्षा चिंताएं भी थीं। आर्मी ने स्टूडेंट्स के पैरंट्स की तमाम चिंताओं को दूर किया। 4 से 13 अप्रैल के बीच हुए टूर के हाल में मिले फीडबैक के मुताबिक, दिल्ली से गए युवाओं ने पाया कि वे कश्मीर की जो तस्वीर अब तक समझते रहे हैं, असल में कश्मीर से बिल्कुल अलग है। अगर वहां के कुछ लोगों में अलगाव का भाव है तो इसकी वजह यह हो सकती है कश्मीर की देश के दूसरे हिस्सों से पर्याप्त कनेक्टिविटी नहीं है।

स्टूडेंट्स ने आर्मी के ट्रांजिट कैंपों में रहकर देखा कि हमारी सेना के जवान किस तरह की चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। आर्मी की ओर से चलाए जा रहे गुडविल स्कूलों को देखकर सुखद आश्चर्य हुआ। यह पता चला कि घाटी में हिंसा, विरोध प्रदर्शन, बंद के कारण छात्रों को किस तरह का नुकसान उठाना पड़ता है। कश्मीरी स्टूडेंट्स को भी बाहरी छात्रों से मिलकर पढ़ाई और करियर के अवसरों के बारे में पता चला।

टूर के फीडबैक में यह भी लिखा गया है कि हिंसा के लिए चर्चित कश्मीर में प्राकृतिक सुंदरता, समृद्ध संस्कृति, सूफी संगीत और कश्मीरीयत के मूल्यों जैसी कई चीजें अहम हैं। फीडबैक के बाद तय किया गया है कि भविष्य में भी इस तरह के टूर आयोजित किए जा सकते हैं। टूर के लिए 10 दिनों का समय कम पाया गया।